B.A. II Hindi Hons.

द्विवेदी युग की हिंदी साहित्य में प्रतिक्रिया एवं प्रभाव

डॉ. सरोजिनी नन्द पाठक
हिन्दी विभाग
एस०एन० कॉलेज, जहानाबाद

पिछले आन्दोलनों से यह स्पष्ट है कि सामाजिक स्थितियों का साहित्य पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। जैसे भक्तिकाल की अतिशय आध्यात्मिकता की प्रतिक्रिया में रीतिकाल का प्रादुर्भाव हुआ वैसे ही द्विवेदी युग की अनुशासन की कठोरता, उपदेशात्मकता, इतिवृत्तात्मकता, रस विहीनता जैसी स्थितियों की तीव्र प्रतिक्रिया साहित्य में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के जीवन काल में ही होनी प्रारंभ हो गयी थी। किन्तु उनका साहित्य जगत पर इतना प्रभाव था कि लोग चाह कर भी उनकी इच्छा के विरुद्ध न जा सके। किन्तु उनके पराभव के बाद साहित्य के क्षेत्र में बड़े वेग से परिवर्तन आरंभ हो गया। यह परिवर्तन जितना काव्य के क्षेत्र में परिलक्षित हुआ उतना गद्य में नहीं दिखलाई पड़ा। इसका कारण चाहे जो भी हो किन्तु काव्यक्षेत्र में व्यापक परिवर्तन का आरंभ हो गया।

द्विवेदीयुग में साहित्य में नैतिकता को तो स्वर मिला किन्तु हृदय का पक्ष तो उपेक्षित हो रह गया।

"हम कौन थे, क्या हो गये और क्या होंगे अभी
आओ बैठ कर विचारें समस्यायें सभी।" भा०भा०

"भोली-भाली गाय हमारी
दूध बहुत यह देती है
सुन्दर सुन्दर बछड़े देकर
बदले में घास लेती है।" जैसी तुकबंदीपरक कविताएँ लिखी जा रही थीं। इनमें हृदय की रंजन व पिपासा को तृप्त करने की क्षमता नहीं थी। इसी प्रतिक्रिया में हिन्दी काव्य जगत को

अतः काव्य आन्दोलन छायावाद का जन्म हुआ। इसके साथ ही कविता का स्वर पूर्णतः बदल गया। अब तक जो कविता बहिर्मुखी थी सहसा अन्तर्मुखी हो गयी। किन्तु ऐसा भी नहीं हुआ कि काव्य ने समाज का साथ छोड़ दिया हो। ऐसा बिल्कुल ही नहीं था। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला एवं महादेवी वर्मा ने इस काव्य आन्दोलन का नेतृत्व किया। इन्हीं चारों को छायावाद के चार स्तंभ के रूप में प्रसिद्धि मिली। इनकी कविताओं में वह सब कुछ है जिसका निषेध द्विवेदी जी ने कर रखा था। प्रेमी-प्रेमिका के राग, विराग और अनुराग का ऐसा वर्णन इस काल में प्राप्त होता है जिसमें दैहिक पक्ष का पूर्णतः अभाव हो गया है फिर भी प्रेम के वर्णन में कोई कमी नहीं आ पायी है। निराला की कविता 'जूही की कली' में संयोग श्रृंगार के समस्त पक्ष उपलब्ध हैं किन्तु इसमें कहीं से भी अश्लीलता दिखाई नहीं पड़ती। वैसे ही प्रसाद की लहर आँसू, पंत की ग्रंथि जैसी रचनाएं एक ओर जन-जन की भावनाओं को अभिव्यक्ति भी दे रही थी तो दूसरी ओर सामाजिक मर्यादा की रक्षा भी कर रही थी। महादेवी वर्मा लिख गयी हैं:-

"यदि तुम आ जाओ एक बार
कितनी करुणा कितने संदेश
पथ में बिछ जाते बन पराग
यदि तुम आ जाओ एक बार।"

इस गीत में आत्मपरकता तो है ही साथ ही व्यक्ति निरपेक्षता भी है इसमें कहीं से भी रीतिकालीन उद्दामता दिखाई नहीं पड़ती। स्वच्छन्दतावाद तो हिन्दी साहित्य में इस तरह की कविताओं का लेखन पहले भी हो रहा था। किन्तु दुर्भाग्य से सामान्य नहीं कवि के पास दुर्भाग्य से जीवन भाव नहीं था। हृदय से निकली होने के कारण इन कविताओं का न [illegible] फिर भी केवल सम्मान हुआ बल्कि उन्हें अंगीकार भी किया गया।

"जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति सी छायी
दुर्दिन में आँसू बनकर
वह आज बरसने आयी।"